विचार बिन्दु

जिन्हें हम हीन या नीच बनाये रखते है वो भी क्रमशः हमे हेय और दीन बना देता हैं। –टैगोर

चरम पर है देश में नशे का कारोबार

देश में नशे का कारोबार अपने चरम पर है। प्रतिदिन लाखों-करोड़ों की ड्रग्स पकड़ी जा रही है मगर बजाय थमने के यह कारोबार लगातार बढ़ता ही जा रहा है। बड़ी संख्या में युवा नशे के दलदल में धंसते जा रहे हैं जहां से बाहर निकल पाना लगभग नामुमकिन है। दुनिया की सबसे बड़ी युवा आबादी वाला देश भारत है। युवा नशे के मकड़जाल में फंसकर बर्बादी के कगार पर पहुंच रहे हैं। इससे उनकी सेहत तो खराब हो ही रही है साथ ही उनका सामाजिक स्तर भी गिरता जा रहा है।

मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो नशे का सामान चाय-पान की थड़ियों, मेडिकल स्टोरों और शिक्षण संस्थाओं के आसपास आसानी से उपलब्ध हो जाता है। सुनसान रास्ते व खंडहर इमारतें नशा करने वाले बच्चों व युवाओं के विशेष अड्डे हैं। नशाखोरी की आदत 12 से 20 साल तक के युवाओं में अधिक देखने को मिल रही है। इससे आने वाली पीढ़ी के भविष्य पर संकटों के बादल मंडराने लगे हैं। कभी चोरी-छिपे बिकने वाले नशे का सामान आज धड़ल्ले से बिक रहा है। नशा मनुष्य को अपराध की ओर ले जाता है जो शांतिपूर्ण समाज के लिए अभिशाप का जहर है।

मनोचिकित्सकों का कहना है कि युवाओं में नशे के बढ़ते चलन के पीछे आधुनिकता की चकाचौंध भरी बदलती जीवन शैली, परिवार से विभिन्न प्रकार के दबाव, परिवारिक झगड़े, इन्टरनेट की अत्यधिक लत, एकाकी जीवन, परिवार से दूर रहने, पारिवारिक कलह जैसे अनेक कारण हो सकते हैं। नशा, नाश का मूल है। यह स्वास्थ्य और सामाजिक प्रतिष्ठा को क्षय करता है। नशा एक ऐसी बुराई हैं जो हमारे समूल जीवन को नष्ट कर देता हैं। नशे की लत से पीड़ित व्यक्ति परिवार के साथ समाज पर बोझ बन जाता हैं। युवा पीढ़ी सबसे ज्यादा नशे की लत से पीड़ित हैं। हिंसा, बलात्कार, चोरी, आत्महत्या आदि अनेक अपराधों के पीछे नशा एक बहुत बड़ी वजह है। शराब पीकर गाड़ी चलाते हुए एक्सीडेंट करना, शादीशुदा व्यक्तियों द्वारा नशे में अपनी पत्नी से मारपीट करना आम बात है। मुँह, गले व फेफड़ों का कैंसर, ब्लड प्रैशर, अल्सर, यकृत रोग, अवसाद एवं अन्य अनेक रोगों का मुख्य कारण विभिन्न प्रकार का नशा है ।

नशा नशा नशा आखिर ये नशा है क्या ? व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक स्थिति को बदल देने वाले रसायन, जो प्रयोग करने वाले को नींद या नशे की हालत में ला दे, उन्हें नशा कहा जाता है। मॉर्फिन, कोडेन, फेंटाइनाइल आदि इस श्रेणी में आते हैं। नारकॉटिक्स पाउडर, टैब्लेट, कैपशूल और इंजेक्शन के रूप में आते हैं। ये आदमी के दिमाग और आसपास के टिशू को उत्तेजित करते हैं। लोग इसे मजे के लिए इस्तेमाल करते हैं, जो लत का रूप ले लेता है। नशा करने के लिए लोग आमतौर पर शुरुआत में कफ सिरप और भांग आदि का इस्तेमाल करते हैं और फिर धीरे-धीरे चरस, गांजा, अफीम, ब्राउन शुगर आदि लेने लगते हैं। नशा एक ऐसी बुराई है, जिसमे मानव का जीवन समय से पहले ही अंधकार और मौत की राह पर चला जाता है। नशाखोरी क्या है? एक खतरनाक बीमारी जिसके क्षणिक सुख के चलते इंसान अपनी जिंदगी से हाथ धो बैठता है। यह केवल एक बीमारी नहीं है बल्कि यह अनेक रोगों की जननी भी है।

यह भी सच है कि शराब की बिक्री से सरकार को एक बड़े राजस्व की प्राप्ति होती है। मगर इस प्रकार की आय से हमारा सामाजिक ढांचा क्षत-विक्षत हो रहा है और परिवार के परिवार खत्म होते जा रहे हैं। हम विनाश की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। देश में शराब बंदी के लिए कई बार आंदोलन हुआ, मगर सामाजिक, राजनीतिक चेतना के अभाव में इसे सफलता नहीं मिली।

नशे के रूप में लोग शराब, गाँजा, जर्दा, ब्राउन.शुगर, कोकीन, स्मैक आदि मादक पदार्थों का प्रयोग करते हैं, जो स्वास्थ्य के साथ सामाजिक और आर्थिक दोनों लिहाज से ठीक नहीं हैं। नशे का आदी व्यक्ति समाज की दृष्टी से हेय हो जाता हैं, और उसकी सामाजिक क्रियाशीलता जीरो हो जाती हैं, फिर भी वह व्यसन को नहीं छोड़ता हैं। धूम्रपान से फेफड़े में कैंसर होता हैं, वहीँ कोकीन, चरस, अफीम लोगों में उत्तेजना बढ़ाने का काम करती हैं, जिससे समाज में अपराध और गैरकानूनी हरकतों को बढ़ावा मिलता हैं। इन नशीली वस्तुओं के उपयोग से व्यक्ति पागल और सुप्तावस्था में चला जाता हैं। तम्बाकू के सेवन से तपेदिक, निमोनिया, साँस की बीमारियों का सामना करना पड़ता हैं। इसके सेवन से जन और धन दोनों की हानि होती हैं।

आजादी के बाद देश में शराब की खपत 60 से 80 गुना अधिक बढ़ी है। यह भी सच है कि शराब की बिक्री से सरकार को एक बड़े राजस्व की प्राप्ति होती है। मगर इस प्रकार की आय से हमारा सामाजिक ढांचा क्षत-विक्षत हो रहा है और परिवार के परिवार खत्म होते जा रहे हैं। हम विनाश की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। देश में शराब बंदी के लिए कई बार आंदोलन हुआ, मगर सामाजिक, राजनीतिक चेतना के अभाव में इसे सफलता नहीं मिली। सरकार को राजस्व प्राप्ति का यह मोह त्यागना होगा तभी समाज और देश मजबूत होगा और हम इस आसुरी प्रवृत्ति के सेवन से दूर होंगे।

चाइल्ड लाइन इंडिया फाउंडेशन की एक रिपोर्ट अत्यधिक डरावनी है। इस फाउंडेशन का एक सर्वे बताता है कि देश में नशाखोरी करने वाले 65 प्रतिशत लोगों की उम्र 18 वर्ष से भी कम है। संस्था का यह भी कहना है कि इसमें युवाओं की हिस्सेदारी निरंतर बढ़ती जा रही है। युवा वर्ग नशे की चपेट में है। इनका असर बच्चों पर भी पड़ रहा है। इन पर नशा न सिर्फ शारीरिक बल्कि मानसिक दुष्प्रभाव डाल रहा है। नशे की पूर्ति के लिए अपराध से भी वह हिचक नहीं रहे हैं। थिंक चेंज नामक एक स्वतंत्र संस्था की एक हालिया रिपोर्ट में बताया गया है कोरोना के बाद देश में नशीले पदार्थों की खपत तेजी से बढ़ी है।

रिपोर्ट में कहा गया है नशे की यह प्रवृत्ति देश की तरुणाई तक पहुँच गई है जिसके खतरनाक परिणामों से देश को जूझना पड़ेगा। नशे का कारोबार देश में 15 लाख करोड़ को पार कार चुका है। मिडिया रिपोर्ट्स के अनुसार आये दिन न सिर्फ लोग गांजा-चरस-अफीम-सुलेशन-ड्रग्स, कोरेक्स और नशीली इंजेक्शन के आदि हो रहे हैं बल्कि इनके सेवन से लोग मौत के शिकार भी हो रहे हैं। नशा करने से लिवर, किडनी और फेफड़े खराब हो जाते हैं। डिप्रेशन, मानसिक अस्थिरता, फोकस और कंसन्ट्रेशन लॉस, भ्रम की बीमारी, आत्यहत्या करने का खतरा और इन जैसी कई बीमारियों के होने का खतरा होता है। युवाओं में नशे की प्रवृत्ति कुछ वर्षों से निरंतर बढ़ रही है। कुछ में तो नशे की जरूरत भारत में पिछले तीन वर्षो से नशे का कारोबार पांच गुना तेजी से बढ़ रहा है। मुंबई या मायानगरी में यह उससे भी कहीं ज्यादा तेज गति से बढ़ रहा है।

भारतीय प्रबंधन संस्थान रोहतक की तरफ से कराए गए एक सर्वे में पता चला है कि मादक पदार्थों का लगभग 84 प्रतिशत हिस्सा पाकिस्तान की तरफ से आता है। पाकिस्तान की सीमा से सटे राजस्थान और पंजाब के साथ ही मुंबई उसका सबसे पहला लक्ष्य होता है। नशे के अवैध कारोबार को रोकने के लिए जरूरी है की सरकार के साथ समाज जागरूक हो। यह अनेक सामाजिक, शारीरिक और आर्थिक बुराइयों और बीमारियों की जड़ है। इससे दूर रहना समाज और देश के हित में है। इसके लिए सामूहिक प्रयासों की जरुरत है। हमारा समाज तभी स्वस्थ होगा जब हम इन बुराइयों से अपने को दूर कर लेंगे।

जब तक आप खुद नहीं चाहेंगे, कोई और आपका नशा नहीं छुड़ा पाएगा। सबसे पहले मन में ठान लें कि आप नशा छोड़ना चाहते हैं। फिर जो भी नशा कर रहे है उसकी तरफ देखे नहीं। अपने शरीर पर हो रहे शारीरिक नुक्सान का अनुमान करे। अपने परिवार और बच्चों के भविष्य को देखें। मन कड़ा करें और नशे को छोड़ दे।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

लोकप्रिय/अच्छा काम करने वाली सरकारों को भी जनता, बेरहमी से सत्ता से बाहर का रास्ता दिखाने में देर नहीं करती

महावीर सिंह

जैसे-जैसे लोकसभा चुनाव अंतिम दौर की तरफ बढ़ रहे है, टीवी चैनल्स पर व अखबारों में भी परिणाम अनुमानों पर धूंवाधार बहसें चल रही है। एक पक्ष का कहना है अबकी बार 400 पार। चुनाव तो पहले ही जीत चुके। दूसरे पक्ष का कहना है, 250 के भी लाले पड़ेंगे। कोई-कोई तो 400 का तोड़ 140 से भी नीचे बता कर आनन्दित हो रहे है। खैर, जनता का निर्णय तो 4 जून को आ ही जाएगा किन्तु अनुमान लगाने से आम आदमी को भी कौन रोक सकता है, खूब अनुमान लगाएं, इस पर अभी जीएसटी नही लगा है। चलिए कुछ कयासबाजी करें।

1977-78 में एक नौजवान एसडीओ को एक मंत्रीजी ने टेलीफोन किया कि उन्हें क्षेत्र का एक दिन का दौरा करना है और एसडीओ को साथ रहना है। दौरे में मंत्रीजी रसूखदार व्यक्तियों से मिले और हर जगह उनका स्वागत हुआ। सांयकाल चाय पर मंत्रीजी नें एसडीओ से पूछा, दौरा कैसा रहा। नौजवान एसडीओ ने कहा– मंत्रीजी का बढ़िया स्वागत-सत्कार हुआ, लोग मंत्रीजी को अपने बीच पाकर प्रसन्न हुए। मंत्रीजी ने टोक कर पूछा, यों नहीं, अगर चुनाव हों तो क्या रुख रहेगा। एसडीओ ने कहा, जहां-जहां आप गए, सब आपके आदमी है, गांवों के हर प्रकार से बड़े आदमी है, इसलिए इस दौरे से आपके प्रश्न का उत्तर मुश्किल है। मंत्रीजी ने फिर कहा कि इंदिराजी को बंशीलाल जी ने यह फीडबैक दे रखा है कि अभी चुनाव करवाते हैं तो कांग्रेस भारी बहुमत से पुनः सत्ता में आएगी। इसलिए सभी कांग्रेसियों को फील्ड में दौर कर फीडबैक देना है।

खैर, कुछ दिन बाद लोकसभा चुनावों की घोषणा हो गई। उसी एसडीओ ने दूरदराज पहाड़ों, घाटी में स्थित पोलिंग स्टेशन्स का दौरा किया और एक जगह एक 70-80 साल के बुजर्ग ने एसडीओ से एक सवाल पूछा कि–"जिनको 19 महीने जेल में रखा उनका दोष क्या था?" एसडीओ ने यह बात मंत्रीजी को बताई कि अगर दूर पहाड़ों, घाटियों में स्थित गांव के वृद्ध व्यक्ति यह पूछते हैं तो नीचे तक कोई ऐसी बात जरूर है जो हर आदमी महसूस कर रहा है। चुनाव हुआ, राजनीति के, करीब-करीब सारे वटवृक्ष धराशाही हो गए।

इमरजेंसी से चारों ओर चंगासी ही दिख रहा था। इंदिरा जी जैसी लोकप्रिय नेता, जिसने पाकिस्तान के दो हिस्से कर दिए, अणुबम परीक्षण कराया, बैंकों का राष्ट्रीकरण किया और आम आदमी को बैंक ऋण मुहैया होने लगा, राज घरानों के प्रिवीपर्स-विषेधाधिकार खत्म किए, गांव व गरीब के लिए इनटीग्रेटेड रूरल डेवलोपमेन्ट जैसे प्रोग्राम चलाए, राशन की दुकानें खोली, सरकारी जमीनों का भूमिहीनों को आवंटन किया फिर सरकार क्यों हारी? शायद जनता ने इमरजेंसी को सरकार की मनमानी, सत्ता का घोर दुरुपयोग व राजनीतिक विपक्षियों पर, अनावश्यक ज्यादती माना।

इंदिराजी की शहादत के बाद राजीव गांधी प्रधान मंत्री बने। सौम्य, मृदुभाषी राजीव की सरकार ठीक चल रही थी। कई ऐतिहासिक फैसले हुए। चीन के साथ सम्बन्ध सुधरे। उपभोक्ता संरक्षण कानून बना। वन और पर्यावरण के क्षेत्र में सराहनीय कार्य हुए। पंचायतों और स्थानीय निकायों को संवैधानिक दर्जा, अधिकार देने के लिए कदम उठाए, यद्यपि सम्बंधित संविधान संशोधन वे नही करवा पाए, जो कालांतर में नरसिम्हा राव की सरकार ने किए। कम्प्यूटर, सूचना प्रौद्योगिकी को अपनाने के लिए सरकारी दफ्तरों व अन्य कम्पनियों, लोगों को प्रोत्साहित किया? मौसम के पूर्वानुमानों के लिए पुणे में पहले सुपर कम्प्यूटर की स्थापना की।

फिर ऐसा क्या हुआ कि वे चुनाव हार गए? शाहबानो के मामले में सुप्रीम कोर्ट के फैसले को बदलना जनता को रास नहीं आया। श्रीलंका के सम्बन्ध में फैसला जनता को निरर्थक सा लगा। उनकी छवि को सर्वाधिक हानी बोफोर्स मामले ने पहुंचाई। जब उनका वित्त मंत्री (राजा नहीं फकीर है, देश की तकदीर है) ही, अपनी कलाई पर लगी घड़ी घूमा-घूमा कर कहने लगा कि इस घड़ी में उस एकाउंट के नम्बर है जिसमें बोफर्स रिश्वत के पैसे गए है और उनके राज में आते ही वापिस आएंगे। राजीव गांधी कई दिनों तक संसद नही आए। इसने जनता के मन में इस बात को बल दे दिया कि हो न हो बोफोर्स नाम की दाल में कुछ न कुछ काला जरूर है। अयोध्या के राममंदिर-बाबरी मस्जिद मामले में जल्दबाजी ने भी भाजपा को एक भावनात्मक मुद्दा दे दिया। जनता ने अब तक कि सर्वाधिक सांसदों वाली सरकार को मौका मिलते ही बाहर का रास्ता दिखा दिया।

नरसिम्हाराव, मनमोहन सिंह जी की जोड़ी ने भारत की बिगड़ी आर्थिक स्थिति को संभाला। उनकी नीतियों से उद्योगों में निवेश बढ़ा, व्यापार बढ़ा, नए रोजगार बनने लगे। लाइसेंस-परमिट-कोटा राज पर अंकुश लगा। किन्तु नरसिम्हाराव की छवि उनकी पार्टी ही बिगाड़ती रही। उन्हें सर्वमान्य नेता नहीं माना गया। बाबरी मस्जिद मामले ने तो यूपी में कांग्रेस की जड़ें ही हिला दी। बची-खुची कांग्रेस, मायावती के साथ समझौते से खत्म सी हो गई। कांग्रेस पुनः सत्ता से बाहर हुई।

2004 से 2014 तक मनमोहन सिंह सरकार ने दो टर्म पूरे किए। इस अवधि में सूचना का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, फूड सिक्युरिटी एक्ट, मनरेगा योजना व काम का अधिकार, पारिवारिक सम्पति में महिलाओं के अधिकारों की स्पष्टता के लिए अधिनियम इत्यादि से जनता को अधिकार सम्पन्न किया। फिर सरकार को बाहर का रास्ता क्यों दिखा दिया? मनमोहन सिंह एक विद्वान, देश हित में निर्णय लेने वाले व सौम्य व्यक्तित्व के धनी जरूर थे किंतु लोकप्रिय जन नेता नहीं थे। उन्हें हमेशा एक मनोनीत प्रधानमंत्री के रूप में ही जाना गया। उनके कार्यकाल के अंतिम दो सालों में मंहगाई बढ़ी, 2जी व कोल ब्लॉक आवंटन, कॉमनवेल्थ गेम्स जैसे तथाकथित घोटालों की मीडिया में रात और दिन चर्चा ने सरकार की छवि बहुत धूमिल कर दी। यद्यपि इन घोटालो को उजागर करने वाले सज्जन कालांतर में लाभान्वित होते भी दिखे। इन सारे तथ्यों की रोशनी में, अब तीसरी बार भाजपा सरकार के नारे पर विचार करें। प्रचार माध्यमों में, भाजपा के 24 घन्टे धुंवाधार प्रचार, प्रधान मंत्री, योगी, शाह व दूसरे नेताओ के एक-एक दिन में 4, 5, 6 जनसभाएं, रैलियां आदि के चलते यह सर्वाधिक आकर्षक सम्भावना है कि भजपा की ही तीसरी बार सरकार बनने वाली है बशर्ते जनता सिवाय मीडिया प्रचार के ओर कुछ नहीं देखती-सोचती-चर्चा करती है और केवल उसे जो कुछ रात और दिन दिखाया जा रहा है उसे ही परमसत्य मानती हो।

सही है चुनाव हो रहे है, लोकतंत्र सुरक्षित है तो फिर विपक्ष के नारे में क्या दम? किंतु 1978 में भी तो ऐसा ही था। प्रचार माध्यमों में जैसा प्रचार सरकार की नीतियों, गारंटियों का है, वैसा ही मीडिया में पहले भी होता आया है। लाभार्थी ग्रुप्स पहले भी थे, अब भी है। हाँ, अब लाभार्थियों को गिनाने पर फोकस ज्यादा है। कितने लोगों को पक्के घर मिले, शौचालय बने उज्ज्वल गैस कनेक्शन्स मिले, जनधन खाते खुले, कितने को किसान सम्मान निधि मिली और सबसे ऊपर 80 करोड़ को मुफ्त राशन। यह सब बड़े लाभार्थी ग्रुप तो है। अगर यह लाभार्थी केवल इसी आधार पर वोट दे दें कि उन्हें भाजपा सरकार ने लाभान्वित किया है तो फिर तीसरी बार मोदी सरकार में क्या शंका?

तो फिर विपक्ष की सरकार के विरुद्ध लड़ाई कहाँ है-यह यो इकतरफा सा जंग लगता है। भ्रष्टाचार पर तो चुनावी चर्चें पहले भी थे, अब भी है। सही है मोदी सरकार पर भ्रष्टाचार के वैसे आरोप नहीं जैसे 2013-14 में थे-किंतु एलेक्टरल बोंडस, पीएमकेयर फण्ड, पीएमकेयर फण्ड के सम्बंध में शंकाएं तो, कम ही सही, किन्तु है जनता में। जाति जनगणना और आरक्षण के मुद्दे पर भी सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच बड़ी मौखिक लड़ाई चल रही है। सतह के नीचे इसकी भी हलचल तो है। किसको कितना प्रभावित करेगी, 04 जून को ही पता चलेगा। मीडिया की निष्पक्षता पर घोर सन्देह पर आम आदमी चर्चा तो करता है चाहे उसकी चर्चाओं को मीडिया में कोई स्थान न मिले। वैसे जनता में यह भी सुनने को मिलता है कि 24 घण्टे 2, 4, 5 पक्ष-विपक्ष के चेहरों को सुनते-सुनते कान पक गए। अब टीवी देखने की उतनी इच्छा ही नही रही जितनी चुनावों के शुरू में थी।

ग्रामीण भारत, मजदूरों के भारत, निम्न मध्यम आय वर्ग वाले 20, 30, 40 हजार महीना की आमदनी वाले परिवारों में मंहगाई चर्चा में है, सरकारी खंडन उनके गले नहीं उतरता। बेरोजगरी युवकों और उनके परिजनों में चिंता व चर्चा का विषय है। किसान, मजदूर वर्ग में ही सही, अग्निवीर योजना के प्रति नाराजगी तो है। किसानों के विभिन्न मुद्दों पर (मुख्यतः पंजाब, हरियाणा, उत्तर पश्चिमी राजस्थान, पश्चिमी यूपी, मालवा, महाराष्ट्र के कुछ हिस्सों में) सरकार से सवाल तो है, यद्यापि सरकार ने किसान सम्मान निधि से उसकी धार थोड़ी कुंद की है।

महिला पहलवानों के मामले में भी, कम से कम, कुछ हल्को में नाराजगी तो है। कहीं-कहीं हल्की चर्चा चीन से लगती सीमा के हालात पर भी, मणिपुर पर भी सुनाई देती है। इन सब मुद्दों का चुनाव पर कितना प्रभाव पड़ेगा, शायद ही कोई 4 जून से पहले बता पाए। जनता में दबी हुई ही सही किन्तु यह भी चर्चा तो है कि क्या भाजपा में सारे ही नेता महात्मा विदुर के अवतारी है जो, कोई उधर झांकने की जरूरत ही नही होती। चाहे सरकार कितने ही जोर से खंडन करे किन्तु कहीं न कहीं यह जन चर्चा चलती रहती है कि चुनाव आयोग की निष्पक्षता संदेहास्पद है। मीडिया में न सही किन्तु हल्की चर्चा तो है कि सरकार के दबाव में है यह संस्थाएँ और विपक्षियों के विरुद्ध कुछ ज्यादा ही उपयोग हो रहा है। शीर्ष नेताओं द्वारा बार-बार मर्यादाहीन भाषा का उपयोग कर एक-दूसरे पर घटिया छीटाकस्सी भी जनता को पसंद कम ही आ रही है। कई बार सत्ता विरोध की लहरें हल्की होती है, सतह के नीचे चलती है जैसा 1977-78, 2003-04 में था। कभी विरोध की लहर सतह पर दिखती है जैसा 2013-14 में था।

उपर उल्लेखित सत्ता विरोध की छोटी-छोटी धाराएं है जो भाजपा की वोट रूपी नदी में से कितना पानी इधर-उधर बहा ले जाती है, उसी अनुपात में चुनाव परिणाम प्रभावित होंगे। वैसे टीवी चैनल्स पर भी अब कई पत्रकारों, चुनाव विश्लेषकों ने 400 पार के नारे को महज कार्यकर्ताओं के हौसला अफजाई के लिए बताना शुरू कर दिया। अब कुछ पत्रकारों, चुनाव व राजनीतिक विश्लेषकों ने यों भी कहना शुरू कर दिया कि माहौल में पहले सी बात नहीं दिख रही, हल्का बदलाव तो दिखता है किन्तु भाजपा को स्पष्ट बहुमत मिलेगा। इसके विपरीत कुछ पत्रकारों, विश्लेषकों, प्रवक्ताओं आदि का मानना है कि यदि बंगाल, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, ओडिशा, बिहार में भाजपा पर्याप्त सीटें नहीं बढ़ा पाई तो फिर अन्य राज्यों में होने वाले थोड़े-थोड़े घाटे को भी भाजपा पूरा नही कर पाएगी तथा इस सम्भावना से इनकार नहीं किया सकता कि उसे स्पष्ट बहुमत न भी मिले। यह भी कि यदि मीडिया प्रचार, रैलियों आदि से, शीर्ष संस्थाओं के उयोग-दुरुपयोग से ही चुनाव जीते जाते तो न तो पहले और न आगे कोई सरकार कभी सत्ता से बाहर हो ही नही सकती। कुछ को यह कहने में भी कोउ संकोच नही कि ताकत भाजपा के पास है और सरकार मोदीजी ही बनाएँगे। ताकत की उनकी व्याख्याएं भी बड़ी रोचक हैं। 4 जून तक लगाते रहो कयास, 4 जून को जनता फैसला आएगा उसे सब को मानना ही पड़ेगा।

–महावीर सिंह,
पूर्व आईएएस

बुद्ध पूर्णिमा पर चांदनी रात में वन विभाग ने वन्य जीवों की गणना की

रावतभाटा, (निसं)। बुद्ध पूर्णिमा पर चांदनी रात में वन विभाग की और से 23 मई से 24 मई तक वॉटर होल पद्धति से वन्य जीवों की गणना की गई। 23 मई को बुद्ध पूर्णिमा पर वन्यजीवों की गणना शुरू की गई। बुध पूर्णिमा के दिन सुबह 8 बजे से लेकर 24 मई सुबह 8 बजे तक गणना करी गई। बुद्ध पुर्णिमा के अवसर पर भैंसरोडगढ़ वन्य जीव अभ्यारण्य क्षेत्र में सुबह 8 बजे से ही वन विभाग के कर्मचारी और अधिकारी वन्य जीवों की गणना में जुट गए।

■ ढलते सूरज के साथ ही वाटर फॉल पर प्यास बुझाने पैंथर, जंगली सुअर, वानर, लोमड़ी सहित अन्य वन्य जीव दिखे

वन विभाग की और से बुद्ध पूर्णिमा पर वॉटर हॉल पद्धति से वन्य जीवों की गणना की गई।

वनकर्मियों ने 27 वाटर हॉल पर चिन्हित स्थानों के निकट मचान बनाकर और ऊंचे इलाकों में मोर्चा संभाला। छोटे और बड़े वन्य जीवों को पहचानकर उनकी गणना की। गणना शुक्रवार 24 मई को सुबह 8 बजे पूरी हुई। इसके बाद कार्मिक विभाग को अंतिम रिपोर्ट सौंपेंगे। क्षेत्रीय वन अधिकारी दिनेश नाथ ने जानकारी देते हुए बताया कि इस बार करीब 50 वनकर्मी वॉलंटरी सहित करीब 10 महिला वन्यकर्मियों ने चिलचिलाती गर्मी में मोर्चा संभाले रखा था। वहीं शाम 6 बजे से मचान पर बैठे वनकर्मियों को वन्य जीव नजर आने लग गए थे। ढलते सूरज के साथ ही वाटर फॉल पर प्यास बुझाने पैंथर, जंगली सुअर, वानर, लोमड़ी सहित अन्य वन्य जीव दिखे। वन अधिकारी दिनेष नाथ ने बताया कि वनकर्मी पूरी रात नजर बनाए रखें हुए थे। सुबह 8 बजे तक गणना की गई।

वन अधिकारी दिनेष नाथ ने बताया कि बुधवार को सभी वन्यकर्मियों को ट्रेनिंग दी गई। गणना के दौरान बरती जाने वाली सावधानियां, वन्य जीवों के पग मार्क लेने की ट्रेनिंग सहित अन्य प्रशिक्षण दिया गया। यहां वॉलिंटियरों के साथ कुछ महिला वन रक्षक पहली बार गणना कर रही है। यहां कुल 10 महिला वन्यकर्मियों सहित 40 कर्मी गणना में शामिल हैं।

पानी की समस्या को लेकर परेशानी

पावटा, (निसं)। पीएचइडी विभाग के पावटा कस्बे के श्मशान घाट स्थित पानी की टंकी मे पानी चढ़ाने वाला मोटर पंप खराब होने के कारण खारवालों की ढाणी, रामलीला मैदान, पटेलों का मोहल्ला, इंदिरा कॉलोनी, सब्जी मंडी कॉलोनी, गोपाल भैया मंदिर के पास, किला ऊपर मालियों का मोहल्ला, खुहारो के मोहल्ले सहित विभिन्न वार्डों में पिछले दो दिनों से पेयजलापूर्ति बाधित होने के बाद तीसरे दिन खराब मोटर पंप खराब को सही करने के बाद भी तीसरे दिन भीषण गर्मी में भी लोगों को पेयजल के लिए काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। केवल10 मिनट ही पेयजल आपूर्ति होने के बाद लोग पीने का पानी तक नहीं भर पाए। पिछले दो दिन से जलापूर्ति समय पर नहीं हो रही हैं। कभी पानी भी आता है तो सही पर्याप्त मात्रा में नहीं आ रहा है। ऐसे में वार्डवासी परेशान हो रहे हैं, बाजार से कैंपर व पानी का टैंकर मंगवाकर पानी की पूर्ति कर रहे हैं। वार्डवासियों ने बताया कि गर्मी के सीजन में जलापूर्ति चंद मिनट के लिए होने के चलते वार्डवासियों को परेशानी भुगतनी पड़ रही है। वार्डवासियों ने बताया कि जनप्रतिनिधियों की अनदेखी व जलदाय विभाग की लापरवाही का खामियाजा कस्बेवासियों को भुगतना पड़ रहा है। प्रतिदिन कस्बे के वार्डो में पेयजल की सप्लाई बाधित की सूचना जलदाय विभाग द्वारा लोगों को नहीं दी जाती है। ।लोगों का कहना है कि पानी की समस्या अगर विभाग के अधिकारियों को नहीं बताएंगे तो कैसे उस समस्या का हल होगा।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 25 मई, 2024

ज्येष्ठ मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2081, ज्येष्ठा नक्षत्र दिन 10:36 तक, सिद्ध योग प्रातः 10:06 तक, तैतिल करण प्रातः 7:12 तक, चन्द्रमा दिन 10:36 से धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-वृष, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-मीन, बुध-मेष, गुरू-वृष, शुक्र-वृष, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज से नौ तपा आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ 7:20 से 9:01 तक, चर 12:23 से 2:45 तक, लाभ-अमृत 2:05 से 5:27 तक।

राहूकालः 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 5:39, सूर्यास्त 7:05

मेष
अपनी कार्य योजना को दिन के मध्यान्ह तक सीमित रखें। मध्यान्ह पूर्व में बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

वृष
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को दिन के मध्यान्ह पूर्व करने का प्रयास करें। मध्यान्ह पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

मिथुन
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क
व्यक्तिगत परेशानियों से राहत मिलेगी। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
परिजनों के व्यवहार के कारण दुःख हो सकता है। आपसी ईर्ष्या के कारण परेशानी हो सकती है। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
परिवार में सुसंदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

तुला
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

वृश्चिक
अपने आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

धनु
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। महत्वपूर्ण कार्य सुगमता से बनने लगेंगे।

मकर
आर्थिक/वित्तिय मामलों को दिन के मध्यान्ह पूर्व में करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह पश्चात अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। आार्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।